स्या॥
को
२

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

४ यथा तापक्षेत्रकालीनापवर्तेषु नभसि मेघपटलादौ वर्णादिवत् स्वजनसहितस्य
मरणकालेऽसद्भूतदुःखोद्भावनतः सद्भूतदुःखोद्भावनेनानुकम्पा दुःखेनाभिभूतस्य
दुःखप्रतीकारचिन्तनेन दुःखोपशमनार्थं दुःखेनाभिभूतस्याश्रुपातनेन
दुःखोत्पादनेन तद्वेदनेन परिदेवनेन दुःखोदीरणेन दुःखसंघातनेन
दुःखभयेन शोकेन शोचनतया दैन्यभावेन परिदेवनतया रुदितेन
परुषवचनतया पिट्टनतया परितापनतया एतैः कारणैः असातावेदनीयकर्मतया
कर्म उदीर्णं भवति ॥ ४ ॥ मोहनीयस्थानानि त्रिंशत् तद्यथा ये त्रसान्
प्राणिनो जलमध्ये प्रबलमोहोदयात् प्राणिनां प्राणान् विलोडयन्
अन्तर्जलं कृत्वा मारयन्ति तेषां मोहनीयकर्मोदयो भवति १ ये
प्राणिनां प्राणान् हस्तेन पादेन वा शीर्षं भित्त्वा मारयन्ति तेषां
मोहनीयकर्मोदयो भवति २ ये प्राणिनां प्राणान् मुखं हस्तेन
पिधाय मारयन्ति तेषां मोहनीयकर्मोदयो भवति ३ ये
मायां कृत्वा मायाविनो वा सन्तो मिथ्या भाषन्ते तेषां मोहनीयकर्मोदयो
भवति ४ ये सभामध्ये सत्यामृषां मृषां भाषन्ते तेषां मोहनीयकर्मोदयो

स्मा ग
श्री

४ नव का॰वनमञ्ज मदावकु॰नवकान तापा[illegible]पका॰वनमपवका न ताञकुव तावसे[illegible]तावेन का॰वनम
नद्वा तावव क्रा इ्ता नस्मा वत बन्णता वके द मत्वा द तो व वान ता मरावका से वेत वा का॰॰ वेरो पाद
व कान बथो नते द मते प वमान तावे न वकानत्वा वकु॰ नत्वनवेरोन से बाता वाद्वा नव व वे तो व॰ नमा
माञ्जु माद्द त्णा है ववे तो व॰न व्यञ्ज वा नत्णा कान क य [illegible]द॰ व॰त व॰न वाञोत वाताव सा नस्मा वत
वन्न म ता वा॰ [illegible]व तव्वा द। व॰न वाञोत वा ताव न म वै तु सा माना नि का न॰ ण मत वा कन त वा वा॰।
स्मा ता व के द मा व कु॰ न व का न ता त न क्रा ण मेताव के द क ता त न क्रा वका व त्वा व कु॰ न त्व मा व व त ब
मता वा॰ न[illegible] वे र मा त वा नि वा न ता ण द। न बै व॰ञ्जु मा वा ञ व॰ ने व त्वा यो है तु स भा ना नि क न ता ञ्ज
माता वे मवाद्द॰ञ्जु मत्वा व कु॰ नव कान त्वा व कु॰ नव त बन्ण ता वा ञ्जु मत्व व न यो ता व के द क ता क
वका नता त न क्रा म मा न सी ण्ण ञ्जु म त्वा व कु॰न। व कान त्वा व कु॰ न त्वा त। वत ब ण्णता व के द क
व का ध ता व के द का णो॰ व न्गोवा ण न वे से व॰ञ्ज माञ्ज ञ्जु मा द त्णा यो है तु स मा ना न क न पा म सा न सी

६

७१ कर्मेत्तज्ञानस्याऽऽवेदनीयकर्मवृत्तेः वक्तव्यतायां वेदनीयकर्मवृत्तेर्मात्तावद्वक्तव्यतायां
ज्ञेयमात्तावद्वेदनीयकर्मवक्तव्यतायां ज्ञेयं वेदनीयकर्मतत्तज्ञानवक्तव्यतायां च ज्ञेयं वेदनीयकर्मवृत्तेः मात्तावदः
वक्तव्यतायां वेदनीयकर्मतत्तद्वेदनस्य अनुभवनात्मकस्य ज्ञानस्य तत्तत्कर्मवृत्तेः वक्तव्यतायां च
पदेन नवतीर्णः वक्तव्यतायां वक्तव्यतायां च तत्तद्वेदनीयकर्मवृत्तेः वक्तव्यतायां च
उपर्णत्वात् वेदनीयकर्मवृत्तेः । तद्यथा वरासिधेनुसदृशैः राज्ञः वक्तव्यतायां वक्तव्यतायां
यथा तत्तन्मधुलिप्तखड्गधारास्थानीयेन तत्तद्वेदनीयकर्मवृत्तेः वक्तव्यतायां वक्तव्यतायां
केनापि वचनादिना । अत्र चैवं प्रयोगः एकं वरासिं आदाय तद्राज्ञः तद्राज्ञानं वरासिदेन तद्राज्ञः
सम्बन्धकं जनेभ्यः तस्य कर्तृतद्राजानस्य ततस्तद्राज्ञानस्य कर्मतापन्नकर्तृकं तत्तद्वेदनीयकर्मवृत्तेः वक्तव्यतायां
तद्वरासिदेनं तद्राज्ञः तत्तन्मधुलिप्तखड्गधारास्थानीयं तत्तद्वेदनीयकर्मवृत्तेः वक्तव्यतायां ज्ञेयं वेदनीयकर्म

ঘটনাটি ঘটেছিল ১৯৭৫ সালের ১৫ই আগস্ট। সেদিন ভোরবেলা ঢাকা শহরের ধানমন্ডি ৩২ নম্বর সড়কে বঙ্গবন্ধু শেখ মুজিবুর রহমানের বাসভবনে সেনাবাহিনীর একদল বিপথগামী সদস্য হামলা চালায়। তারা বঙ্গবন্ধু, তাঁর স্ত্রী বেগম ফজিলাতুন্নেসা মুজিব, তিন পুত্র শেখ কামাল, শেখ জামাল, শেখ রাসেল এবং তাঁদের নবপরিণীতা পুত্রবধূ সুলতানা কামাল ও রোজী জামালকে নির্মমভাবে হত্যা করে। শুধু তাই নয়, বঙ্গবন্ধুর দুই কন্যা শেখ হাসিনা ও শেখ রেহানা তখন জার্মানিতে ছিলেন বলে সেদিন বেঁচে যান। এই হত্যাকাণ্ড বাংলাদেশের ইতিহাসে এক কালো অধ্যায়, যা আজও জাতির হৃদয়ে গভীর ক্ষত হয়ে আছে।

১৫ই আগস্টের ভোর তখনো পুরোপুরি ফোটেনি। ধানমন্ডি ৩২ নম্বর বাড়ির চারপাশে তখন নিস্তব্ধতা। হঠাৎ ভারী অস্ত্রের গুলির শব্দে সেই নিস্তব্ধতা খানখান হয়ে যায়। বঙ্গবন্ধু তখন ঘুমাচ্ছিলেন। গুলির শব্দে তিনি জেগে ওঠেন এবং নিচে নেমে আসেন। সেনাবাহিনীর একদল সদস্য তাঁকে ঘিরে ধরে। তারা বঙ্গবন্ধুকে বাড়ির সামনের সিঁড়িতে গুলি করে হত্যা করে। তাঁর শরীর সিঁড়িতে লুটিয়ে পড়ে। এরপর তারা ওপরতলায় যায় এবং বঙ্গবন্ধুর স্ত্রী, পুত্র, পুত্রবধূদের একে একে হত্যা করে। বাড়ির কাজের লোক ও নিরাপত্তারক্ষীরাও এই হামলায় নিহত হন।

হত্যাকাণ্ডের পর ঘাতকরা বঙ্গবন্ধুর মরদেহ ও পরিবারের অন্যদের মরদেহ ফেলে রেখে চলে যায়। তারা কোনো দাফন বা সৎকারের ব্যবস্থা করেনি। পরে বঙ্গবন্ধুর ভাগ্নে আবদুর রব সেরনিয়াবাত ও অন্যরা মরদেহগুলো বনানী কবরস্থানে নিয়ে যান। সেখানে তাঁরা বঙ্গবন্ধুকে তাঁর মা-বাবার কবরের পাশে দাফন করেন। বঙ্গবন্ধুর স্ত্রী ও অন্যদের মরদেহ দাফন করা হয় বনানী কবরস্থানের অন্য অংশে।

১৫ই আগস্টের হত্যাকাণ্ড বাংলাদেশের ইতিহাসে এক গভীর ক্ষত। এই ঘটনা জাতিকে শোকে স্তব্ধ করে দিয়েছিল। বঙ্গবন্ধু ছিলেন বাংলাদেশের স্বাধীনতার স্থপতি, আর তাঁর পরিবারের সদস্যদের এভাবে হত্যা করা ছিল জাতির জন্য এক অপূরণীয় ক্ষতি। এই হত্যাকাণ্ড আমাদের শিক্ষা দেয় যে, ক্ষমতার লোভে মানুষ কতটা নিষ্ঠুর হতে পারে। এটি আমাদের ইতিহাসের এক কালো অধ্যায়, যা আমরা কখনো ভুলতে পারব না।